5.1 परिचय (Introduction)

कार्ल रिटर और हम्बोल्ड्ठ दोनों ही भूगोल के आधुनिक चिरसम्मत काल (Classical period of Modern Geography) के पर्याय माने जाते हैं। दोनों ने अपने अथक प्रयासों, विशिष्ट अनुभवों, समालोचनाओं, शोध व विश्लेषणात्मक एवं विस्तृत व्याख्या वाली कृतियों के द्वारा भूगोल को अभिनव स्वरूप प्रदान किया। इन्हें आधुनिक भूगोल के नींव के पत्थर या भवन के स्तम्भ कह सकते हैं। प्रकृति प्रेमी रिटर का तात्कालिक प्रभाव हम्बोल्ड्ट से अधिक रहा, क्योंकि ये जीवन भर विश्वविद्यालय की शिक्षा से जुड़े रहे। उनके शिष्यों ने उनके ही जीवन काल कमें यूरोपीय देशों के विश्वविद्यालयों में पदासीन होकर अपने गुरू के चिंतन को अधिक प्रेरणास्पद विधि से समझाया। इसी कारण 13वीं शताब्दी के अधिकांश भाग में रिटर के चिंतन-जिसमें पृथ्वी की एकता, प्रादेशिक अध्ययन एवं नियतिवादी विचारधारा सम्मिलित है, का वर्चस्व बना रहा। इस जर्मन विद्वान ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ अर्डकुण्डे (ardkunde) के प्रकाशन के द्वारा भौगोलिक अध्ययन को इतने ऊँचे स्तर पर पहुँचा दिया कि संसार के सभी विद्वानों का ध्यान भूगोल की ओर आकर्षित हो गया।

5.2 रिटर का जीवन एवं शिक्षा (Life and Education of Ritter)

कार्ल रिटर का जन्म 7 अगस्त 1779 में जर्मनी (Prussia) के क्वेडलिनबर्ग (Quedlinberg) नगर में एक डा० एफ० डब्लू० रिटर (F.W. Ritter) के यहाँ हुआ। दो वर्ष की आयु में ही उनके पिता की मृत्यु हो गई। पाँच वर्ष की उम्र में रिटर में प्रकृति अध्ययन पर केन्द्रित इनेप्फेन्थल सल्लमन विद्यालय (Schneptenthal Slagmann School) में दाखिला लिया, जो प्रकृति प्रेमी रूसो व पेस्टोलॉजी के सिद्धांतों द्वारा संचालित होने के कारंण प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुभूति के लिए काफी प्रसिद्ध था। यहाँ उन पर वहाँ के भूगोल के शिक्षक जे० सी० एफ० गृट्मुथ्स का विशिष्ट एवं व्यक्तिगत प्रभाव पड़ा, जिसके कारण रिटर का रूझान भूगोल और प्रकृति प्रेम दोनों की ओर बढ़ा। उन्होंने भूगोल के साथ-साथ इतिहास, दर्शन, धर्म, गणित एवं प्राकृतिक विज्ञान को भी शिक्षा प्राप्त की।

स्कूली शिक्षा समाप्त करने के बाद एक धनवान बैंकर बेथमन हॉलबेग (Bethmann Hallweg) की मदद से उन्होंने हेले विश्वविद्यालय (University of Halle) में दो वर्षों तक उच्च शिक्षा प्राप्त की तथा बदले में हालवेग के बच्चों को ट्यूटर के रूप में पढ़ाना शुरू किया। शोध कार्यों में रूचि बढ़ने के कारण उनका भूगोल और इतिहास के साथ संबंध गहराता गया। यहाँ से अध्ययन, भ्रमण एवं शिक्षित वर्ग से संपर्क की सुविधा उपलब्ध होने के कारण इन्होंने पश्चिमी यूरोप के अधिकांश भागों का भ्रमण किया। इस भ्रमण के बाद उन्होंने 'यूरोप के इतिहास', भूगोल एवं सांख्यिकीय लक्षणों पर 1804 में दो खण्डों में एक विस्तृत ग्रंथ प्रस्तुत किया। उपलब्ध सांख्यिकी के आधार पर उन्होंने यूरोप की पहली बार छह मानचित्र बनाए। 1807 में उन्होंने गोथिंग (Gothing) विश्वविद्यालय में 'मानव, प्रकृति एवं इतिहास (सांस्कृतिक तत्व स्वरूपता)' पर शोध कार्य किया। 1810 में उन्होंने 'New Geography' नामक ग्रंथ प्राकृतिक भूगोल के तत्त्वों एवं घटनाओं के संबंध में लिखा, परन्तु आलोचनाओं के कारण बिना प्रकाशित करवाए उसकी पाण्डुलिपियों को मित्र विद्वानों ने वितरित करवा दिया।

1814-19 के मध्य उन्होंने Gothingen विश्वविद्यालय में मुख्यत: भूगोल का ही अध्ययन शुरु किया। यही उन्होंने 1917 में अपना विख्यात अर्डकुण्डे (Erdkunde) ग्रंथ का प्रथम खंड प्रकाशित करवाया जो अफ्रीका महाद्वीप पर था। कुछ समय बाद यहीं पर इसका दूसरा खण्ड भी लिखा। इससे प्रभावित होकर 1819 में उन्हें फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय के अंतर्गत लिपजिग में इतिहास एवं भूगोल का शिक्षक नियुक्त किया गया। 1820 में उन्हें बर्लिन विश्वविद्यालय एवं रॉयल सैनिक अकादमी (Royal Military Academy) ने एक साथ भूगोल के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया। तत्पश्चात् वे जीवनपर्यन्त बर्लिन में ही रहे, जहाँ उनकी भेंट हेम्बोल्ड्ट से हुई तथा दोनों अक्सर अपने विचारों का आदान-प्रदान करते रहे। इससे भूगोल के विकास एवं उसके समन्वयकारी स्वरूप को सामने लाने में बहुत मदद मिली।

1821 में डाक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त करने के बाद 1825 में वे Professor Extraordinarius के रूप में पदस्थापित हुए। अफ्रीका की खोजयात्रा में उन्होंने खास रुचि ली। वे ब्रिटिश विद्वानों और वैज्ञानिक संस्थानों जैसे रॉयल ज्योग्राफिकल सोसायटी के संपर्क में भी हमेशा बने रहे। वे खोजकर्त्ता हेनरिक बार्थ (Heinrick Barth) के शिक्षक रहे व दास प्रथा व रंग-भेद (racism) के कट्टर विरोधी भी। 1822 में वे पर्शियन अकादमी ऑफ साइंसेज (Pursian Academy of Sciences) तथा 1824 में 'Societe' Ariatique de Paris के corresponding सदस्य के रूप में चुने गए। उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण ग्रंथ लिखे व कई महत्त्वपूर्ण पदों पर भी काम किया। 28 मई 1859 को उनका निधन हो गया।

5.3 रिटर का भूगोल में योगदान (Contribution of Ritter in Geography)

5.3.1 रिटर के भौगोलिक कार्य एवं रचनाएँ [Geographical and Literary works of Ritter]

रिटर ने अपने जीवनकाल में कई ग्रंथ, मानचित्र और बहुत से शोधपत्र प्रकाशित किए तथा कई संस्थाओं एवं भूगोल विभागों में अध्यक्षीय भाषण भी हुए। उनकी मुख्य रचनाएँ निम्नलिखित हैं :-

1. 1804 – 'यूरोप का भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांख्यिकीय चित्रण (Europe : A geographical, Historical and Statistical Painting) – प्रथम ग्रंथ।
2. 1806 – यूरोप के छह मानचित्र।
3. 1807 – यूरोप के भूगोल का द्वितीय खंड।
4. 1810 – 'नवीन भूगोल' (New Geography) – अप्रकाशित।
5. 1811 – तक विधितंत्र पर प्रकाशित कई शोध पत्र।
6. 1815 – 'काले एवं केस्पियन सागर के मध्य के प्रदेशों का मानव स्थानांतरण : सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन।
7. 1817 – 'अर्डकुण्डे' का प्रथम खंड (अफ्रीका महाद्वीप पर)
8. 1818 – 'अर्डकुण्डे' का द्वितीय खण्ड (एशिया महाद्वीप पर)
9. 1833 – 'अर्डकुण्डे' बृहदाकार ग्रंथमाला, जिसमें लगभग 20,000 पृष्ठ हैं।
10. 1859 – इस समय तक अर्डकुण्डे के 19 ग्रंथों का प्रकाशन।

अर्डकुण्डे ग्रंथ की विषय-वस्तु (Theme of Erdkunde) –

अर्डकुण्डे जिसका अर्थ है भूदृश्य (landscape), को रिटर जीवन भर लिखते रहे। 1817 में प्रथम